डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number - 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 **दिनांक - 3-07-2020**

विषय- संस्कृत साहित्य का इतिहास

दण्डी का जीवन परिचय

संस्कृत गद्य काव्य के लेखकों में सबसे प्राचीन कृतियां महाकवि दंडी की उपलब्ध होती है। इनकी स्थिति काल छठी शताब्दी के उत्तरार्ध और सातवीं सदी के आरंभ में माना जाता है।

दण्डी ने तीन ग्रंथों की रचना की है- 1. **काव्यादर्श** 2. **दसकुमारचरित और** 3. **अवंति सुंदरी कथा।**

काव्यादर्श अलंकार शास्त्र का ग्रंथ है। दसकुमारचरित में दस राजकुमारों के यात्रा वर्णन का विवरण है। अवंतिसुंदरी कथा में प्रेम प्रणयण का वर्णन है।

दण्डी, सुभग एवं मनोरम वैदर्भी गद्य शैली के आचार्य कहे जाते हैं। इनकी वर्णन प्रणाली सरल और प्रसादिक है। इनकी भाषा में अलंकारों का आडंबर नहीं है। इसी कारण यह नैसर्गिक प्रभावपूर्ण मंजी हुई और मुहावरे दार है। दंडी के काव्य में अपनी विशेषता है। वाक्य प्राय: छोटे होते हैं। वाक्य विन्यास आयास जनक नहीं अपितु ओजस्वी, ललित एवं सुव्यक्त है। अर्थ की स्पष्टता, रस की सम्यक अभिव्यक्ति, शब्द विन्यास की चारुता तथा कल्पना की उर्वरता दण्डी की शैली के विशेष गुण है। दण्डी के पद लालित्य की बड़ी प्रशंसा है। दण्डिन: पद लालित्यम्।